

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रपति जी ने संसद के दोनों सदनों को वर्ष 2017 के प्रारम्भ में ही सम्बोधित किया। भारत किस तेजी से बदल रहा है, देश की जनशक्ति का सामर्थ्य क्या है, गांव, गरीब किसान की जिन्दगी किस प्रकार से बदल रही है, उसका एक विस्तार से खाका सदन में रखा था। मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद देने के लिए आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ। मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

इस चर्चा में आदरणीय श्री मल्लिकार्जुन जी, श्री तारिक अनवर जी, श्री जयप्रकाश नारायण जी, तथागत सत्पथी, श्री कल्याण बनर्जी, ज्योतिरादित्य सिंधिया इत्यादि कई वरिष्ठ महानुभावों ने चर्चा को प्राणवान बनाया। कई पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है और मैं इसके लिए चर्चा में शरीक होने वाले सभी आदरणीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ।

कल भूकंप आया। इस भूकंप के कारण जिन-जिन क्षेत्रों में असुविधा हुई है, मैं उनके प्रति अपनी भावना व्यक्त करता हूँ। केन्द्र सरकार राज्य के पूरे सम्पर्क में है। स्थिति में कोई आवश्यकता होगी तो और कुछ टीमें वहां पहुंच भी गई हैं, लेकिन आखिर भूकंप आ ही गया।...(व्यवधान) मैं सोच रहा था कि यह भूकंप आया कैसे ? ...(व्यवधान) क्योंकि धमकी तो बहुत पहले सुनी थी। कोई तो कारण होगा कि धरती मां इतनी रूठ गई होगी।...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

...(Interruptions)... *

माननीय अध्यक्ष : केवल प्रधान मंत्री जी का भाषण रिकार्ड में जाएगा।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : कल्याण जी, यह ठीक नहीं है।

...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : कल्याण जी, आपका सी.आर. ठीक हो रहा है, आपका कल्याण होगा। ...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

...(Interruptions)... *

HON.SPEAKER: Kalyanji, this is not the way. Please take your seat.

...(Interruptions)

श्री नरेन्द्र मोदी : कल का भूकम्प...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : यह ठीक नहीं है, आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : यह क्या है आप थोड़ी शांति रखिए।

...(व्यवधान)

शहरी विकास मंत्री, आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री तथा सूचना और प्रसारण मंत्री (श्री एम. वैकैय्या नायडु) : देश के प्रधानमंत्री जी के सामने ऐसे बोलते हैं।...(व्यवधान) सदन की गरिमा होती है।...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Mr. Kalyan Banerjee, this is not the way.

... (Interruptions)

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILIZERS AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI ANANTHKUMAR): Madam, he cannot interrupt like this... (Interruptions) We have heard you. Now, please do not interrupt... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Mr. Kalyan Banerjee, please. This is not the way. Now, I am warning you.

... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Now, please take your seat.

... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : कृपया आप ऐसा न करें। कल आपने अच्छा भाषण दिया था, सबने उसे सुना। आज आप बिल्कुल शांति से रहें।

...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Now, please take your seat.

... (Interruptions)

श्री नरेन्द्र मोदी : अध्यक्ष महोदया, मैं सोच रहा था कि आखिर भूकंप आया क्यों। जब कोई स्कैम में भी सेवा का भाव देखता है, स्कैम में भी नम्रता का भाव देखता है तो सिर्फ मां ही नहीं, बल्कि धरती मां भी दुःखी हो जाती है और तब जा कर भूकंप आता है।...(व्यवधान) इसलिए, राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में जनशक्ति का ब्योरा दिया है। हम यह जानते हैं कि कोई भी व्यवस्था, लोकतांत्रिक हो या अलोकतांत्रिक, जनशक्ति का मिजाज कुछ और ही होता है। कल मल्लिकार्जुन जी ने कहा था कि कांग्रेस की कृपा है कि

अब भी लोकतंत्र बचा है और आप प्रधानमंत्री बन पाये। वाह! क्या शेर सुनाया है। ... (व्यवधान) आपने इस देश पर बहुत बड़ी कृपा की है, लोकतंत्र बचा लिया है, कितने महान लोग हैं, लेकिन उस पार्टी के लोकतंत्र को देश भली-भाँति जानता है। पूरा लोकतंत्र एक परिवार को आहूत कर दिया गया है।... (व्यवधान)

वर्ष 1975 का कालखंड, जब देश पर आपातकाल थोप दिया गया था, हिन्दुस्तान को जेलखाना बना दिया गया था, देश के गणमान्य वरिष्ठ नेता जयप्रकाश बाबू समेत लाखों लोगों को जेल की सलाखों में बंद कर दिया गया था, अखबारों पर ताले लगा दिये गये थे, लेकिन उन्हें अंदाज नहीं था कि जनशक्ति क्या होती है। लोकतंत्र को कुचलने के ढेर सारे प्रयासों के बावजूद भी इस देश की जनशक्ति का सामर्थ्य था कि लोकतंत्र पुनः प्रस्थापित हुआ।

यह जनशक्ति की ताकत है कि गरीब माँ का बेटा भी इस देश का प्रधानमंत्री बन सकता है। राष्ट्रपति जी ने जनशक्ति का उल्लेख करते हुए कहा है कि चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी का वर्ष है। इतिहास सिर्फ किताबों की अटारी में पड़ा रहे, तो समाज जीवन को प्रेरणा नहीं देता है। हर युग में इतिहास को जानने का, इतिहास को जीने का प्रयास आवश्यक होता है। उस समय हम थे या नहीं थे, हमारे कुत्ते भी थे या नहीं थे, औरों के कुत्ते हो सकते हैं। हम कुत्तों वाली परम्परा से पले-बड़े नहीं हैं, लेकिन देश के कोटि-कोटि लोग थे। जब कांग्रेस पार्टी का जन्म भी नहीं हुआ था, वर्ष 1857 का स्वतंत्रता संग्राम देश के लोगों ने जान की बाजी लगाकर लड़ा और सभी ने मिलकर लड़ा था। सम्प्रदाय की कोई भेद रेखा नहीं थी, तब भी कमल था और आज भी कमल है।... (व्यवधान) यहां ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो मेरी तरह आजादी के बाद पैदा हुए हैं और हमारे में से बहुत लोग हैं, जिनको आजादी की लड़ाई में अपना योगदान देने का सौभाग्य नहीं मिला, लेकिन देश के लिए जीने का तो सौभाग्य मिला है और हम जीने की कोशिश कर रहे हैं।... (व्यवधान) देश ने अपार जनशक्ति के दर्शन किए हैं।

लाल बहादुर शास्त्री जी की अपनी गरिमा थी। युद्ध के दिन थे। हर हिंदुस्तानी के दिल में भारत विजय के भाव से भरा हुआ माहौल था और उस समय जब लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा था, तब देश ने अन्न त्याग के लिए पहल की थी। सरकार बनने के बाद आज के राजनीतिक वातावरण को हम जानते हैं, ज्यादातर राज व्यवस्थाओं ने, राजनेताओं ने, राज्य सरकारों ने, केंद्र सरकारों ने जन सामर्थ्य को करीब-करीब पहचानना छोड़ दिया है और यह लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा चिंता का विषय भी रहता है। मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति ने बातों-बातों में कह दिया था कि जो अफोर्ड कर सकते हैं, वे गैस की सब्सिडी छोड़ दें। जब हम जनता से कट जाते हैं, जन-मन से कट जाते हैं, वर्ष 2014 में जब हम चुनाव लड़ रहे थे तब एक दल इस मुद्दे पर चुनाव लड़ रहा था कि एक साल में 9 सिलेंडर देंगे या 12 सिलेंडर देंगे। हम 9 और 12 सिलेंडर की चर्चा को कहां ले गए, हमने कहा कि जो अफोर्ड कर सकते हैं, क्या वे सब्सिडी छोड़ सकते हैं। हमने सिर्फ कहा था और इस देश के एक करोड़ बीस लाख से ज्यादा लोग गैस सब्सिडी छोड़ने के लिए

आगे आए। यह विषय इस सरकार और यहाँ बैठे हुए लोगों के गर्व तक सीमित नहीं है। यह सवा सौ करोड़ देशवासियों की शक्ति का परिचायक है। राष्ट्रपति जी के उद्बोधन के माध्यम से मैं इस सदन से प्रार्थना करना चाहता हूँ और देश के राजनीतिक जीवन में निर्णायक की अवस्था में बैठे हुए निर्णय प्रक्रिया के भागीदार सबका आवाहन करता हूँ कि, हम हमारे देश की जनशक्ति और उसके सार्मथ्य को पहचानें। हम भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए जनांदोलन की अवधारणा लेते हुए एक सकारात्मक माहौल बनाकर देश को आगे बढ़ाने की दिशा में काम कर रहे हैं। आप देखिए जो परिणाम हमें पहले नहीं मिले, उनसे ज्यादा परिणाम अब मिलेंगे। इसके कारण देश की ताकत अनेक गुना बढ़ जाएगी। इनमें से कोई भी ऐसा नहीं है, जो आने वाला कल बुरा देखना चाहता है या हिंदुस्तान का बुरा चाहता है। हर कोई यह चाहता है कि गरीब का भला हो। हर कोई चाहता है कि गाँव, गरीब और किसान को कुछ मिले। मैं ऐसा कहने वालों में से नहीं हूँ कि किसी ने पहले प्रयास नहीं किए।

मैं इस सदन में यह बार-बार कह चुका हूँ। मैं लाल किले से भी बोल चुका हूँ कि अब तक जितनी सरकारें आईं और जितने प्रधानमंत्री आए, हर किसी का इसमें अपना-अपना योगदान है। उस तरफ बैठे हुए लोगों से कभी यह सुनने को नहीं मिला है कि इस देश में कोई चाफेकर बंधु भी हुआ करते थे, जिनकी आजादी में शहादत थी। इनके मुँह से कभी सुनने को नहीं मिला है कि कोई सावरकर जी भी थे, जिनके काला पानी की सजा भुगतने के बाद यह देश आजाद हुआ है। इनके मुँह से कभी सुनने को नहीं मिला है कि कोई भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद भी थे, जिन्होंने देश के लिए बलिदान दे दिया। उनको लगता है कि आजादी सिर्फ एक परिवार ने दिलवाई है। समस्या की जड़ वहाँ है। हम देश को उसकी पूर्णता में स्वीकार करें और उसकी जनशक्ति को जोड़ें। हमारे यहाँ शास्त्रों में कहा गया है :

अमंत्रं अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलं अनौषधं।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति, योजकः तत्र दुर्लभः॥

इसका अर्थ है, कोई अक्षर ऐसा नहीं होता है, जिसमें किसी मंत्र में जगह पाने का पोर्टेंशियल न हो। कोई मूल ऐसा नहीं होता है, जिसमें औषध में जगह पाने का पोर्टेंशियल न हो। कोई इंसान ऐसा नहीं होता है, जो कुछ कर के समाज और देश को दे न सके। जरूरत होती है योजक की - योजकः तत्र दुर्लभः।

इस सरकार ने हर शक्ति को सवांरकर जोड़ने और जनशक्ति के भरोसे उसको आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। स्वच्छता अभियान पर मैं हैरान हूँ। क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमें आजाद हुए इतने साल हो गए हैं। हम महात्मा गांधी का नाम लेते हैं। गांधी जी को दो चीजें प्रिय थीं। वे कहते थे कि आजादी से पहले अगर मुझे कुछ पाना है, तो वह स्वच्छता है। गांधी जी की स्वच्छता की बात को लेकर हम देश के सामने आए। इतनी सरकारें आईं और इतने संसद सत्र चले, लेकिन क्या कभी संसद में स्वच्छता के विषय पर चर्चा तक हुई। यह सरकार आने के बाद पहली बार ऐसा हुआ है। क्या स्वच्छता को भी हम

राजनीति के एजेंडे का हिस्सा बनाएंगे। आपमें से कौन है जो गंदगी में जीना चाहता है। आप में से कौन होंगे, जो गन्दगी में जीना चाहता है। आपके इलाके में कौन होगा, जो गन्दगी चाहता है। इसे आप भी नहीं चाहते हैं, यहाँ वाले भी नहीं चाहते हैं और वहाँ वाले भी नहीं चाहते हैं। लेकिन क्या हम मिलकर एक स्वर में समाज को इस पवित्र कार्य से जोड़कर गांधी जी के सपने को पूरा करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकते। हमें कौन रोकता है।

माननीय अध्यक्ष जी, इस अपार जनशक्ति को आगे लेते हुए इस बार एक चर्चा होनी चाहिए। यह तो सही है कि जब राष्ट्रपति जी के उद्बोधन पर चर्चा होती है और उस समय बजट भी आया होता है, तो उसमें बजट की बातें भी आ जाती हैं और राष्ट्रपति जी के उद्बोधन की बातें भी आ जाती हैं। जब बजट पर चर्चा होगी, तो वित्त मंत्री जी उस पर विस्तार से कहेंगे, लेकिन एक चर्चा आयी है कि बजट जल्दी क्यों लाया गया।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारा पूरा आर्थिक कारोबार कृषि पर आधारित है। ज्यादातर कृषि की स्थिति दीवाली तक पता चल जाती है। हमारे देश की एक कठिनाई है। हम अंग्रेजों की विरासत को ही लेकर चल रहे हैं। मई में बजट की प्रक्रिया से बाहर निकलते हैं। 1 जून के बाद हिन्दुस्तान में बारिश आनी शुरू हो जाती है। तीन महीने तक बजट का उपयोग होना असंभव हो जाता है। एक प्रकार से हमारे पास कार्य करने का समय बहुत बच जाता है। जब समय होता है, तब आखिरी दिनों में पूर्ति करने के लिए, जिसे हर सरकार जानती है कि दिसम्बर से मार्च तक किस प्रकार से बिल कटते हैं और रुपये कैसे खर्च हुए, ये दिखाये जाते हैं। अब हमें यह सोचना चाहिए, मैं किसी की आलोचना नहीं करना चाहता हूँ। अभी भी किसी को समझ में आता है कि क्या कारण था कि आज़ादी के कई वर्षों तक बजट शाम को पाँच बजे आता था। इस पर किसी ने सोचना नहीं, बस पाँच बजे चल रहा है, तो चल रहा है। यह क्यों चल रहा है। पाँच बजे बजट इसलिए चलता था क्योंकि यू.के. की पार्लियामेंट की टाईम के हिसाब से हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के जमाने से शाम को पाँच बजे बजट आया। हमने उसे ही चालू रखा। यह बहुत कम लोगों को मालूम होगा, यदि हम घड़ी ऐसे पकड़ते हैं, तो इंडियन टाईम होता है, लेकिन घड़ी ऐसे पकड़ते हैं, तो लंदन टाईम होता है। यदि आपके पास घड़ी है, तो देख लीजिए। ... (व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : आपने इसीलिए अपनी घड़ी खोली।

श्री नरेन्द्र मोदी : जी हाँ क्योंकि कई लोगों को बहुत चीजें समझ नहीं आतीं, उन्हें पता नहीं चलता है। ... (व्यवधान) जब अटल जी की सरकार आयी, तब बजट का समय बदला गया। इसलिए हमारा भी प्रयास है। जब आपकी सरकार थी, तब आप लोगों ने भी बजट के समय के संबंध में एक कमेटी बनायी थी। उसकी विस्तृत रिपोर्ट है। आप भी चाहते थे कि यह समय बदलना चाहिए। उन्होंने जो प्रपोजल दिया है, हमने उसी को पकड़ा है। लेकिन आप लोग इसे नहीं कर पाए क्योंकि आपकी प्रायरिटी अलग है। आप नहीं

चाहते थे, ऐसी बात नहीं है, लेकिन उसका प्रायरीटी में नम्बर कब लगेगा। इसलिए जो बातें आपके समय में हुई है, उन बातों को बड़े गर्व से आपको कहना चाहिए। उसका फायदा उठाइए। कहिए कि यह तो हमारे समय में हुआ था। अब यह भी आप भूल जाते हैं, लेकिन चलिए मैंने याद दिला दिया। आप इसका भी लाभ दीजिए। ... (व्यवधान)

रेलवे के संबंध में विस्तृत चर्चा बजट पर चर्चा के दौरान होगी। लेकिन हम एक बात समझें कि 90 साल पहले जब रेल बजट आता था, तब ट्रांसपोर्टेशन का एक प्रमुख मोड सिर्फ रेलवे ही था। आज ट्रांसपोर्टेशन एक बहुत बड़ी अनिवार्यता बन गयी है। इकलौता रेलवे ही नहीं है, बल्कि ट्रांसपोर्टेशन के कई प्रकार के मोड हैं। जब तक हम कॉन्प्रिहेंसिवली ट्रांसपोर्ट - इस विषय को जोड़कर नहीं चलेंगे, तो हम समस्याओं से जूझते रहेंगे। अब इसलिए मुख्य धारा में रेलवे व्यवस्था भी रहेगी, उसमें प्राइवेटाइजेशन को कोई तकलीफ नहीं, उसकी स्वतंत्रता को कोई तकलीफ नहीं है, लेकिन सोचने के लिए सरकार एक साथ कॉम्प्रिहेन्सिव, हर प्रकार के, mode of transport को देखना शुरू करे, यह आवश्यक है। हम जब से आए हैं, हमने रेलवे में बजट में बदलाव किया है। आप जानते हैं कि पहले बजट में हमारे गौड़ा जी ने बताया था कि करीब 1500 घोषणाएं हुई थीं और कौन मजबूत हैं, कौन हाउस में ज्यादा परेशान करता है, उनको ध्यान में रखकर, उनको खुश रखकर एक-आधी गोली दी जाती थी, वह भी ताली बजा देता था और अपने इलाके में जाकर बता देता था कि यह काम हो गया है। हमने देखा कि 1500 ऐसी चीजें हुई थीं, जिनका कागज पर ही मोक्ष हो गया था। ऐसा हम क्यों करते हैं, मैं जानता हूँ इससे हमें राजनीतिक दृष्टि से नुकसान होता है, लेकिन किसी को तो जिम्मा लेना पड़ेगा कि देश में जो गलत चीजें डेवलप हो चुकी हैं, उन्हें हम रोकें। ब्यूरोक्रेसी को ये चीजें सूट करती हैं। ऐसी चीजें उनको सूट करती हैं कि राजनेता ताली बजा दें और उनकी गाड़ी चलती रहे। मुझे नहीं चलानी है। देश के सामान्य नागरिक की आशा, आकांक्षाओं के लिए फ़ैसले लेने हैं, अच्छे फ़ैसले लेने का प्रयास है, अच्छी तरह कार्य करने का प्रयास है। इसलिए हम उस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, हम इस काम को कर रहे हैं।

एक विषय नोटबंदी का आया, पहले दिन से यह सरकार कह रही है कि हम नोटबंदी पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं, लेकिन आप लोगों को लगता था कि टी.वी. पर कतार देखते हैं, कल कभी न कभी कुछ हो जाएगा, तब देखेंगे। आपको लग रहा था कि इस समय चर्चा करने से शायद मोदी फायदा उठा जाएगा और इसीलिए चर्चा के बजाय आपने टी.वी. बाइट देने में ही इन्ट्रेस्ट दिखाया। जिस वजह से चर्चा नहीं हुई। अच्छा है इस बार आपने थोड़ा बहुत स्पर्श किया है।... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record. Only the Prime Minister's statement will go on record.

...(Interruptions) ...*

श्री नरेन्द्र मोदी : कितना बड़ा बदलाव आया है। अब मुझे विश्वास है कि जो बारीकी से चीजों का अध्ययन करते हैं, अब तक उनका ध्यान नहीं गया है तो मैं चाँहूँगा कि उनका ध्यान जाए। मई, 2014 के पहले का वक्त आप देख लीजिए, वहाँ से आवाज उठती थी कि कोयले में कितना खाया, 2जी में कितना गया, जल करप्शन में कितना गया, वायु करप्शन में कितना गया, आसमान के करप्शन में कितना गया, कितने लाख गए, यही वहाँ से आवाज आती थी। यह मेरे लिए कितनी खुशी की खबर है कि जब वहाँ से आवाज आती थी कि मोदी जी कितना लाए। तब आवाज उठती थी कि कितना गया, अब आवाज उठ रही है कि कितना लाए। इससे बड़ा जीवन का संतोष क्या हो सकता है!...(व्यवधान) यही तो सही कदम है!...(व्यवधान)

दूसरा जो हमारे खड़गे जी ने कहा कि कालाधन हीरे-जवारात में है, सोने-चाँदी में है, प्रॉपर्टी में है, मैं आपकी बात से सहमत हूँ। लेकिन यह सदन जानना चाहता है कि यह ज्ञान आपको कब हुआ। क्योंकि इस बात का कोई इंकार नहीं कर सकता कि भ्रष्टाचार का प्रारंभ नकद से होता है। उसकी शुरुआत नकद से होती है, परिणाम में प्रोपर्टीज होती हैं, परिणाम में ज्वैलरी होती हैं, परिणाम में गोल्ड होता है, लेकिन शुरुआत नकद से होती है। आपको मालूम है कि यही बुराइयों के केन्द्र में है, बेनामी प्रोपर्टीज हैं, जवाहरात हैं, गोल्ड है, चाँदी है। जरा आप लोग बताइये कि 1988 में जब श्रीमान राजीव गांधी देश के प्रधान मंत्री थे, पंडित नेहरू से भी ज्यादा बहुमत इस सदन में आपके पास था, दोनों सदनों में आपके पास था। पंचायत से पार्लियामेंट तक सब कुछ आपके कब्जे में था। आप ही आप थे, दूसरा कोई नहीं था। वर्ष 1988 में आपने बेनामी सम्पत्ति का कानून बनाया। आपको जो ज्ञान आज हुआ है, क्या कारण था कि 26 साल तक उस कानून को नोटिफाई नहीं किया गया, क्या कारण था कि उसे दबा दिया गया? अगर उस समय उसे नोटिफाई किया होता तो जो ज्ञान आज आपको हुआ है, 26 साल पहले की स्थिति थोड़ी ठीक थी, देश के बहुत जल्दी साफ-सुथरा होने की दिशा में एक अच्छा काम हो जाता। वे कौन लोग थे, जिन्हें कानून बनने के बाद ज्ञान हुआ कि अब कानून दबाने में फायदा है?...(व्यवधान) वे किस परिवार...(व्यवधान) आप इससे बच नहीं सकते। आप किसी का नाम देकर बच नहीं सकते, आपको देश को जवाब देना पड़ेगा। जो ज्ञान आपको आज हुआ है और यह सरकार है, जिसने नोटबंदी से पहले पहला कदम उनके खिलाफ उठाया है, कानून बनाया है।

मैं आज इस सदन के माध्यम से भी देशवासियों को कहना चाहता हूँ, आप कितने ही बड़े क्यों न हो, गरीब के हक का आपको लौटाना ही पड़ेगा और मैं इस रास्ते से पीछे लौटने वाला नहीं हूँ। मैं गरीबों के लिए लड़ाई लड़ रहा हूँ और गरीबों के लिए लड़ाई लड़ता रहूँगा। इस देश की गरीबी के मूल में...(व्यवधान)

* Not recorded.

देश के पास प्राकृतिक सम्पदा की कमी नहीं थी, देश के पास मानव संसाधनों की कमी नहीं थी, लेकिन देश में एक ऐसा वर्ग पनपा, जो लोगों का हक लूटता रहा, यह उसी का नतीजा है कि देश जिस ऊंचाई पर पहुंचना चाहिए था, नहीं पहुंच पाया। आप कहते हैं, कुछ लोग...(व्यवधान) उसकी जिनकी एजेन्सी होगी, वे बोलेंगे। ...(व्यवधान) एक बात मैं कहना चाहूंगा...(व्यवधान) हम यह जानते हैं कि अर्थव्यवस्था को ...(व्यवधान) इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है कि एक समान्तर अर्थव्यवस्था डैवलप हुई थी और ऐसा नहीं है यह काम भी आपके संज्ञान में पहले भी आया था। यह विषय आप ही की सरकार की आप ही की कमेटियों ने भी आपको सुझाया था। जब इंदिरा जी राज करती थीं, तब यशवंतराव जी चव्हाण यह विषय लेकर उनके पास गये थे। तब उन्होंने कहा था कि क्यों भाई, क्या कांग्रेस को चुनाव नहीं लड़ना है।

आपका निर्णय गलत नहीं था, बल्कि चुनाव का डर था। हमें चुनाव की चिंता नहीं है, देश की चिंता है, इसलिए हमने यह निर्णय लिया है। ...(व्यवधान) यह बात निश्चित है, कोई इस बात से इंकार नहीं कर सकता है कि किसी भी व्यवस्था में केश कितना है, चैक कितना है, यह कारोबार विकसित हो चुका है और एक प्रकार से जीवन का हिस्सा बन गया है। जब तक आप उसको गहरी चोट नहीं लगाओगे, तब तक स्थिति से बाहर नहीं आओगे। इसलिए हमने जो फैसले किए हैं, वे सही हैं। आपने किस प्रकार से देश चलाया है। ऐसा लगता है कि कुछ दलों के दिलों दिमाग में चार्वाक का मंत्र उनकी जिंदगी में बहुत काम आ गया है। ...(व्यवधान) उन्होंने चार्वाक के ही मंत्र को लेकर ही काम किया है। तभी जा कर कोई अंग्रेजी कवि को उल्लेख कर के बड़े-बड़े व्यक्ति यह भी कह देते हैं कि मरने के बाद क्या है, क्या देखा है। अब यह तो चार्वाक का तत्व ज्ञान है। मैं उस सदन में जाऊंगा, तब इसका उल्लेख बराबर डिटेल में करूंगा। लेकिन चार्वाक कहते थे -

“ यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत् ऋणम् कृत्वा, धृतम् पीवेत् । भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनम् कुतः ॥ ”

जब तक जीओ, मौज करो। ...(व्यवधान) चिंता किस बात की है, कर्ज लो और घी पीओ। भाई भगवंत मान, ये उस जमाने में संस्कार थे, इसलिए घी कहा, नहीं तो और कुछ पीने का कहते। ...(व्यवधान) उस समय ऋषियों के संस्कार थे तो उन्होंने घी पीने की बात कही थी। शायद आज का जमाना होता तो कुछ और पीने की चर्चा करनी पड़ती। लेकिन इस प्रकार की फिलॉसफी से, कुछ लोगों को लगता है कि जब अर्थव्यवस्था इतनी अच्छी चल रही थी, तब आपने ऐसे समय में ऐसा निर्णय क्यों किया। यह बात सही है। आप जानते हैं कि अगर आपको कोई बीमारी हो और डॉक्टर कहता है कि ऑपरेशन करना है। ऑपरेशन बहुत जरूरी है, फिर भी वह कहता है कि पहले शरीर ठीक करना पड़ेगा। डायबटीज़ कंट्रोल करना पड़ेगा,

यह कंट्रोल करना पड़ेगा, सात-आठ दिन और मशविरा चलेगा, फिर बाद में ऑपरेशन होगा। जब तक वह स्वस्थ नहीं होता है, तब तक डॉक्टर ऑपरेशन करना पसंद नहीं करता है, चाहे कितनी भी गंभीर स्थिति हो। डीमॉनिटाइज़ेशन के लिए यह समय इतना पर्याप्त था कि देश की अर्थव्यवस्था तंदरुस्त थी। अगर दुर्बल होती तो हम यह कतई सफलतापूर्वक नहीं कर पाते। यह तब सफल हुआ है, जब अर्थव्यवस्था मज़बूत थी। दूसरा, ऐसा मत सोचिए कि हड़बड़ी में होता है। इसके लिए आपको मोदी का अध्ययन करना पड़ेगा। ... (व्यवधान) आप देखिए कि हमारे देश में साल भर में जितना व्यापार होता है, करीब-करीब उतना ही व्यापार दीवाली के दिनों में हो जाता है। 50 प्रतिशत दीवाली के दिनों में और 50 प्रतिशत साल भर में होता है। एक प्रकार से पूरा उद्योग-व्यापार, किसानी, सब काम दीवाली के आस-पास पीक पर पहुंच जाता है। उसके बाद नेचुरल लल पीरियड हमारे देश में हमेशा होता है। दीवाली के अलावा दुकानदार भी 15-15 दिन दुकान बंद कर के बाहर चले जाते हैं, लोग घूमने चले जाते हैं। यह प्रॉपर टाइम था जब कि सामान्य कारोबार ऊंचाई पर पहुंच गया था, उसके बाद अगर 15-20 दिन दिक्कत होती है और फिर 50 दिन में ठीक-ठाक हो जाएगा। मैं आप देख रहा हूँ कि जो मैंने हिसाब-किताब कहा था, उसी प्रकार से गाड़ी चल रही है। ... (व्यवधान)

आप जानते हैं, एक जमाना था इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट की मनमर्जी पर... (व्यवधान) एक समय था जब देश में इन्कम टैक्स अधिकारी मनमर्जी पड़े वहाँ जाकर धमकते थे और बाकी क्या होता था, पुराने इतिहास को मुझे दोहराने की जरूरत नहीं है। नोटबन्दी के बाद सारी चीजें रिकॉर्ड पर हैं, कहाँ से आया, किसने लाया, कहाँ रखा, अब उसमें से टॉप नाम टेक्नोलॉजी के द्वारा, डाटा माइनिंग के द्वारा निकाल दिये गये हैं। अब इन्कम टैक्स ऑफिसर को कहीं जाना नहीं है, सिर्फ एस.एम.एस. करके पूछना है कि जरा बताइए कि डिटेल क्या है। आप देखिए किसी भी प्रकार की अफसरशाही के बिना जिसको भी मुख्यधारा में आना है, उसके लिए एक अवसर प्राप्त हो चुका है और मैं मानता हूँ कि इससे क्लीन इन्डिया, जैसे स्वच्छ भारत का मेरा अभियान चल रहा है, वैसे ही आर्थिक जीवन में स्वच्छ भारत का अभियान भी बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। ... (व्यवधान) बेनामी सम्पत्ति का कानून पास हो चुका है, नोटिफाई हो चुका है।

जैसा खड़गे जी ने कहा कि वहीं पर सब कुछ है, अच्छा सुझाव आपने दिया है, हम भी कुछ करके दिखायेंगे और जो भी सुन रहे हैं, वे भी समझें और इसके प्रावधान पढ़ लें कि कितना बड़ा कठोर कानून है। जिसके पास भी बेनामी सम्पत्ति है, उनसे मेरा आग्रह है, अपने चार्टर्ड एकाउन्टेंट से जरा पूछ लें कि आखिर वे प्रावधान क्या हैं। इसीलिए मेरा सबसे आग्रह है कि मुख्यधारा में आइये, देश के गरीबों का भला करने के लिए आप भी कुछ कन्ट्रिब्यूट कीजिए। ... (व्यवधान) कभी-कभी लगता है कि यह निर्णय अचानक हुआ क्या। मैं जरा जानकारी देना चाहता हूँ, जिस दिन हमारी सरकार बनी, हमने कैबिनेट में सबसे पहला काम एस.आई.टी. बनाने का किया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था और लम्बे अरसे तक लटका पड़ा था कि विदेश के

काले धन के लिए एस.आई.टी. बनाओ। हमने बनाई, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था उस प्रकार से बनाई।...(व्यवधान) सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा था :

“... Since 1947, for 65 years, nobody thought of bringing the money stashed away in foreign banks to the country. The Government has failed in its role for 65 years.” This court. feels that you have failed in your duty and so it gave an order for the appointment of the committee headed by former judges of this court. Three years have passed, but you have not done anything to implement the order. What have you done except for filing one report? You have done nothing...”.

यह 24 मार्च 2014 को सुप्रीम कोर्ट ने उस सरकार को कहा है।...(व्यवधान)

SHRI M.I. SHANAVAS (WAYANAD): How much money have you brought? ...

(Interruptions)

श्री नरेन्द्र मोदी : वही तो मैं कह रहा था, वह जमाना था तब आवाज उठती थी, कितना गया, अब आवाज उठ रही है, कितना आया और आकर रहेगा, आता रहेगा।...(व्यवधान)

SHRI M.I. SHANAVAS: Nothing is brought. ... *(Interruptions)*

श्री नरेन्द्र मोदी : आप देखिए एक के बाद एक, विदेश में जमा काले धन के खिलाफ नया कठोर कानून बनाया, प्रॉपर्टी जब्त करने की बात कही, इस बार भी बजट में एक नये कानून की बात कही गयी है, सजा भी 7 साल से 10 साल कर दी है। टैक्स हैवन जो थे मॉरीशस, सिंगापुर वगैरह, जो पुराने नियम आप बनाकर गये थे, हमने बातचीत की, उनको समझाया, उन्हें हमारी परिस्थितियाँ समझायीं, उसको हम ले आए। हमने स्विट्जरलैंड से समझौता किया कि अगर कोई भी हिन्दुस्तानी नागरिक पैसा रखेगा तो वे हमें रिएल टाइम इन्फॉर्मेशन देंगे तो उसका पता चल जायेगा।

13.00 hours

हमने अमेरिका सहित कई देशों के साथ इस प्रकार के समझौते किए हैं। जहां भी हमारा कोई भी भारतीय नागरिक, भारतीय मूल का व्यक्ति पैसे रखेगा तो उसकी जानकारी भारत सरकार को मिलेगी।

उसी प्रकार प्रॉपर्टी बिक्री में 20 हजार रुपए से ज्यादा नकद नहीं, इसका फैसला हमने लिया। हमने रियल एस्टेट बिल को पास किया। ज्वैलरी के मार्केट में भी एक प्रतिशत एक्साइज टैक्स डाला, क्योंकि चीजों को स्ट्रीमलाइन करना था, किसी को परेशान नहीं करना था। आप ही लोग हैं इस सदन में, इधर के हों या उधर के हों। मुझे चिट्ठियाँ आई हैं, जब हमने कहा कि दो लाख रुपए से ज्यादा की अगर

कोई ज्वैलरी परचेज करता है तो उसे पैन नम्बर देना होगा। मैं हैरान हूँ। काले धन और भ्रष्टाचार के खिलाफ भाषण देने वाले लोग मुझे चिट्ठियाँ लिखते थे कि पैन नम्बर मांगने का नियम रद्द कर दीजिए, ताकि लोग कैश मनी से सोना लेते रहें, गहने लेते रहें और काला बाज़ार चलता रहे। पर, हम टिके रहे। हमने उसे करके दिखाया। एक-एक कदम उठाया। मैं जानता हूँ कि राजनीतिक फायदे के लिए कोई ऐसा काम नहीं कर सकता, वरना तो आप पहले कर लेते। इसमें कठिनाई है, लेकिन, देश का भला करने के लिए निर्णय करने थे और गरीबों का भला करना था, इसलिए निर्णय किए।

दो लाख रुपए से ज्यादा के किसी सामान पर और दस लाख रुपए से ज्यादा महंगी गाड़ी पर एक प्रतिशत अतिरिक्त टैक्स लगा दिया। हम 'इन्कम टैक्स डिक्लेरेशन स्कीम' भी लाए। अब तक इस स्कीम में सबसे ज्यादा पैसा लोगों ने डिक्लेयर किया। 1100 से ज्यादा पुराने कानून हमने खत्म किए। यहां नोटबंदी के संबंध में बताया गया, कोई कहता है 150 बार, कोई कहता है 130 बार, सब अलग-अलग आंकड़े बोलते हैं कि आपने इतने नियम बदले।

प्रो. सौगत राय (दमदम) : 150 बार।

श्री नरेन्द्र मोदी : बहुत अच्छा याद रखते हैं।...(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय: 150 आदमी मर गये, 150 बार नियम बदले गए।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : अब मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह तो एक ऐसा काम था, जिसमें जनता की कोई तकलीफ तुरन्त समझने के बाद हम रास्ता खोजने का प्रयास करते थे। दूसरा, जिन लोगों को सालों से लूटने की आदत लगी है, वे रास्ता खोजते थे और हमें वे रास्ते बंद करने के लिए कुछ-न-कुछ करना पड़ता था। लड़ाई का मौसम था। एक तरफ देश को लूटने वाले थे और एक तरफ देश को ईमानदारी की तरफ ले जाने का मोर्चा लगा हुआ था। लड़ाई पल-पल चल रही थी। 'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' इस प्रकार से लड़ाई चल रही थी।

जो आप लोगों का बड़ा प्रिय कार्यक्रम है, जिसको लेकर आप बड़ी पीठ थपथपा रहे हैं, वैसे उसके लिए आपको हक नहीं है, क्योंकि जब इस देश में राजा-रजवाड़ों का शासन था, तब भी गरीबों के लिए राहत काम के नाम से योजनाएं चलती थीं। उसके बाद भी हिन्दुस्तान में 'फूड-फॉर-वर्क' के नाम से कई योजनाएं थीं। देश आज़ाद होने के बाद नौ प्रकार के अलग-अलग नामों से चली हुई योजना चलते-चलते उसे एक नाम दिया गया, जिसे मनरेगा कहते हैं। यह कई यात्राएं करके आया हुआ है। हर राज्य में, जहां कम्युनिस्टों की सरकार थी, उन्होंने भी पश्चिम बंगाल में किया था, जब शरद पवार की सरकार थी, उन्होंने भी इसे महाराष्ट्र में किया था, गुजरात में भी कांग्रेस की सरकार ने किया था। आजादी के बाद हर राज्य में किसी न किसी ने इस प्रकार के काम किए थे। यह कोई नई चीज़ नहीं थी, लेकिन नाम नया था। देश को

और आपको खुद को भी जानकर आश्चर्य होगा कि शांत रूप से इतने सालों से चली हुई योजना के बाद भी मनरेगा में 1035 बार परिवर्तन किए गए, 1035 बार नियम बदले गए। आप कभी अपने आईने में तो झांकिए। उस समय तो लड़ाई नहीं थी, इतने बड़े दबाव में काम नहीं करना था। पर, क्या कारण था कि मनरेगा जैसी योजना, जो एक लम्बे अर्से से चल रही थी, उसे भी लाने के बाद आपको उसमें 1035 बार परिवर्तन करने पड़े।... (व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : वह एक्ट था।... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : नियमों में परिवर्तन किए गए, एक्ट तो एक बार हो गया।... (व्यवधान) एक्ट 1035 बार परिवर्तित नहीं हुआ है।... (व्यवधान)

SHRI ANANTHKUMAR: You listen to the hon. Prime Minister. We have listened to you.... (*Interruptions*) हमने सुना है आपको। आप भी शांति से सुनिए।... (व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी : इसलिए आज मैं आपसे कहता हूँ कि आपको 40 मिनट के बजाय पौने दो घंटे मिल चुके थे... (व्यवधान) मैं आपको काका हाथरसी के कविता की शब्द सुनाता हूँ और मैं काका हाथरसी को याद करता हूँ तो कोई इसे उत्तर प्रदेश के चुनाव के साथ न जोड़े।... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: He is not yielding. बैठिए।

... (*Interruptions*)

श्री नरेन्द्र मोदी : क्योंकि उनके हर चुनाव में काका हाथरसी की बात तो चलती रहती थी।... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: He is not yielding. प्लीज बैठ जाइए।

... (*Interruptions*)

श्री नरेन्द्र मोदी : काका हाथरसी ने कहा था - अंतर पट में खोजिए, छिपा हुआ है खोट और इन्होंने आगे कहा है - मिल जाएगी आपको बिल्कुल सत्य रिपोर्ट

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं एक बात की ओर ध्यान देना चाहता हूँ। सरकार नियमों से चलती है, संवैधानिक जिम्मेवारियों के साथ चलती है। जो नियम आपके लिए थे, वह नियम हमारे लिए भी हैं, लेकिन फर्क कार्य-संस्कृति का होता है। नीतियों की ताकत भी नीयत से जुड़ी हुई होती है। अगर नीयत में खोट है तो नीतियों की ताकत जीरो छोड़ो, माइन्स में चली जाती है। इसलिए हमारे देश में उस कार्य-संस्कृति को भी समझने की जरूरत है। मैं यहां से जब भी कुछ बोलता हूँ तो लोग कहते हैं कि यह तो हमारे समय था, यह तो हमारे समय था। मुझे ऐसा लग रहा है कि आज मैं भी इसी पर थोड़ा खेलूँ। आज मैं आपके मैदान में खेलना पसंद करूँगा।

इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों हुआ। ऐसा तो नहीं है कि आपको ज्ञान नहीं था। ऐसा थोड़े ही था कि आपको कल ही ज्ञान हुआ है। आपको जानकारी थी। महाभारत में इस प्रकार से कहा गया है:

जानामि धर्मम् न च में प्रवृत्तिः
जानामि अधर्मम् न च में निवृत्तिः।

धर्म क्या है, यह तो आप जानते हैं, लेकिन वह आपकी प्रवृत्ति नहीं थी। अधर्म क्या है, वह भी जानते थे, लेकिन उसे छोड़ने का आपको सामर्थ्य नहीं था। मैं आपको बताता हूँ कि नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क...(व्यवधान) अगर मैं इसके लिए कुछ भी कहूँगा तो वहाँ से आवाज उठाई गई कि यह तो हमने शुरू किया। मैं यहीं से शुरू करना चाहता हूँ। आप देखिए, वर्ष 2011 से वर्ष 2014, यानि इन तीन सालों में सिर्फ 59 गांवों में नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क लगा और उसमें भी लास्ट माइल कनेक्टिविटी का प्रावधान नहीं था। प्रोक्वोरमेंट भी पूरी तरह से सेन्ट्रलाइज्ड था। इसका क्या कारण था, सब लोग जानते हैं। अब आप देखिए, हमने पूरी कार्य-संस्कृति कैसे बदली है, एप्रोच कैसे बदली है। इसके लिए सभी राज्यों को साथ में लिया। लास्ट माइल कनेक्टिविटी, यानि स्कूल में ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क मिलना चाहिए, अस्पताल में मिलना चाहिए और पंचायत घर में भी मिलना चाहिए। हमने इस प्राथमिकता को तय किया। हमने प्रोक्वोरमेंट को भी डिसेन्ट्रलाइज्ड कर दिया और परिणाम यह आया कि इतने कम समय में अब तक 76 हजार गांवों में ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क लास्ट माइल कनेक्टिविटी के साथ पूरा हो गया।...(व्यवधान)

दूसरा, अभी यहाँ पर कल बताया जा रहा था कि आप लेशकैश सोसायटी या कैशलेश सोसायटी के लिए बोल रहे हैं। लोगों के पास क्या है, लोगों के पास क्या है, मोबाइल नहीं हैं। मैं हैरान हूँ, मैंने तो वर्ष 2007 के बाद से जितनी चुनाव सभाएं सुनी हैं, आपके नेता गांव-गांव जाकर कहते हैं कि राजीव गांधी कंप्यूटर रिवोल्यूशन लाए, राजीव गांधी मोबाइल फोन लाए, राजीव गांधी ने गांव-गांव कनेक्टिविटी कर दी, आप ही का भाषण है। जब मैं आज कह रहा हूँ कि उस मोबाइल का उपयोग बैंक में भी कनवर्ट किया जा सकता है तो आप कह रहे हैं मोबाइल फोन ही कहां है। यह समझ नहीं आ रहा है, भाई।...(व्यवधान) आप ही कह रहे हैं कि हमने इतना कर दिया और जब मैं उसमें कुछ अच्छा जोड़ रहा हूँ तो कहते हैं कि वह तो है ही नहीं। यह आप क्या समझा रहे थे, ऐसा क्यों कर रहे हैं।

दूसरी बात, यह आप भी मानते हैं, मैं भी मानता हूँ कि पूरे देश के पास नहीं है। मान लीजिए कि चालीस पर्सेंट के पास है तो क्या हम चालीस पर्सेंट लोगों को इस आधुनिक व्यवस्था से जोड़ने की दिशा में सबका सामूहिक प्रयत्न रहना चाहिए या नहीं। साठ पर्सेंट का, चलो बाद में देखेंगे, कहीं तो शुरू करें। इसका लाभ है। डिजिटल करेंसी को हम कम न आंके। एक-एक एटीएम को संभालने के लिए एवरेज पांच पुलिस

वाले लगते हैं। करेंसी को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए, सब्जी और दूध के मोबेलाइजेशन के लिए जितना खर्च होता है, उससे ज्यादा उसके मोबेलाइजेशन में खर्च होता है। अगर हम इन बातों को समझें तो जो कर सकते हैं, सब नहीं कर पाएंगे, हम समझ सकते हैं, लेकिन जो कर सकते हैं, उनको करने के लिए प्रोत्साहित करना, यह नेतृत्व का काम होता है, चाहे वह किसी भी दल का हो। इससे लोगों का भला होने वाला है।

मुझे कोई बता रहा था कि एक सब्जी वाले ने इसे शुरू किया। कल ही मुझे कोई रिपोर्ट देकर गया। उसको पूछा कि तुम्हारा क्या फायदा है। वह बोला कि पहले क्या होता था, एक तो मेरे ग्राहक परमानेंट थे, मैं सबको जानता था। मान लीजिए कि 52 रुपए की सब्जी ली, तो फिर मैडम कहती थी कि पचास रुपए का नोट है, इसे ले लो, तो बोला कि मेरे दो रुपए चले जाते थे और मैं भी बोल नहीं पाता था। मैं हिसाब लगाता था साल भर में मेरे 800-1000 रुपए, रुपया - दो रुपया न देने में ही हो जाता था। भीम लगाने के बाद 52 रुपए है तो 52 रुपए मिलते हैं, 53 रुपए हैं तो 53 मिलते हैं, 48 रुपए 45 पैसे हैं, तो पूरे मिलते हैं। वह बोला कि मेरे तो 800-1,000 रुपए बच गए। देखिए, चीजें कैसे बदलती हैं। ... (व्यवधान) आप मोदी का विरोध कर रहे हैं, कोई बात नहीं, आपका काम भी है, करना भी चाहिए, लेकिन जो अच्छी चीज है, उसे आगे बढ़ाइए। मान लीजिए, यह गांव में नहीं है, अगर शहरों में है तो उसे आगे बढ़ाओ, उसमें योगदान करो, देश का भला होगा, इसमें किसी और व्यक्ति का भला नहीं है। मैं आग्रह करूंगा कि ऐसी चीजों में हम मदद कर सकते हैं, तो मदद करनी चाहिए।

कार्य संस्कृति कैसे बदलती है। रोड बनाना क्या हमारे आने के बाद हुआ। यह तो टोडरमल के जमाने से चल रहा है, शेरशाह सूरी के जमाने से चल रहा है। यह कहना कि यह तो हमारे जमाने से था, हमारे जमाने से था, कहां-कहां तक जाएंगे। लेकिन फर्क क्या है। पिछली सरकार में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना प्रतिदिन 69 किलोमीटर होती थी, हमारे आने के बाद 111 किलोमीटर होती है, यह फर्क है। ... (व्यवधान) हमने रोड बनाने में स्पेस टेक्नॉलाजी का उपयोग किया है। स्पेस टेक्नॉलाजी से फोटोग्राफी होती है, मानिट्रिंग होती है। हमने रेलवे में ड्रोन का उपयोग किया है। फोटोग्राफी करते हैं, काम का हिसाब लेते हैं कि कार्य संस्कृति में टेक्नॉलाजी की मदद से कैसे बदलाव लाया जा सकता है।

ग्रामीण आवास योजना, राजनीतिक फायदा उठाने के लिए नामों को जोड़कर उसका जो उपयोग हुआ, वह हुआ, लेकिन फिर भी आपके समय में एक साल में 10,83,000 घर बनते थे, इस सरकार में एक वर्ष में 22,27,000 घर बने। नेशनल अर्बन रिन्युअल मिशन में एक महीने में 8,017 घर बने। हमारी योजना से 13,530 घर बने। पहले ब्रॉडगेज रेलवे की कमिश्निंग एक साल में 1500 किलोमीटर हुआ करती थी। पिछले साल यह बढ़कर 3000 किलोमीटर यानी डबल हो गई। ... (व्यवधान) इसलिए ये परिणाम अचानक नहीं आए। योजनाबद्ध तरीके से हर पल, हर चीज को मोनीटर करते-करते यही लोग, यही कानून,

यही मुलाजिम, यही फाइल, यही माहौल, उसके बाद भी बदलाव लाने में हम तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। यह अचानक नहीं होता है, इसके लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। इसलिए हमारे शास्त्रों में कहा गया है--

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

उद्यम से ही कार्य सिद्ध होते हैं न कि मनोरथों से। सोए हुए सिंह के मुख में हिरण आकर प्रवेश नहीं करता, उसे भी शिकार करना पड़ता है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, कुछ मूलभूत परिवर्तन कैसे आते हैं। हम जानते हैं कि राज्यों के इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड डिस्कॉम सारे राज्य संकट में हैं। कभी हिन्दुस्तान में लाल किले से एक प्रधान मंत्री द्वारा इसकी चिन्ता की गई थी, इतनी हद तक हालत बिगड़ी हुई थी। पिछले दो सालों में बिजली उत्पादन में क्षमता बढ़ी। कन्वेंशनल एनर्जी को जोड़ा गया। ट्रांसमिशन लाइन को बढ़ाया गया। सोलर एनर्जी को लाया गया। 2014 में वह 2700 मेगावाट थी, आज हमने उसे 9,100 मेगावाट तक पहुंचा दिया। सबसे बड़ी बात डिस्कॉम योजना के कारण हुई। उदय योजना के तहत राज्य जब योजना सफल कर पाएंगे तो उनकी तिजोरी में करीब-करीब एक लाख 60 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा रकम बचने वाली है। राज्यों के साथ जोड़कर अगर भारत सरकार ने एक लाख 60 हजार करोड़ रुपये की घोषणा कर दी होती तो चारों तरफ कहा जाता कि वाह, मोदी सरकार ने इतना पैसा दिया। हमने योजना ऐसी बनाई कि राज्यों के खजाने में एक लाख 60 हजार करोड़ रुपये उदय योजना द्वारा बचत होने वाली है, जो उनके विकास में काम आने वाली है और वे ऊर्जा क्षेत्र के बोझ से बचने वाले हैं।

कोयला - आप जानते हैं कि जहां से कोयला निकलता था, उसके नजदीक नहीं दिया जाता था। क्यों? कहा गया कि रेलवे को थोड़ी कमाई हो जाए। हमने कहा, कमाल हो गया, रेलवे की कमाई के लिए इतना सब करें। हमने रेशनलाइज़ कर दिया, जहां नजदीक है, वहीं से कोयला मिलेगा, कोयले का खर्च हो, उस दिशा में प्रयास किया। उसके कारण कोयले में करीब-करीब 1300 करोड़ रुपये ट्रांसपोर्टेशन खर्च कम हुआ है।

एलईडी बल्ब - हम यह नहीं कहते कि एलईडी बल्ब हम लाए। वैज्ञानिक शोध हुई, आपने भी शुरू किया। लेकिन आपके समय में एलईडी बल्ब करीब 300 रुपये, साढ़े तीन सौ रुपये, 380 रुपये में मिलते थे। एलईडी बल्ब से एनर्जी सेविंग होती है, हमने मिशन रूप में काम किया। पिछले आठ-नौ महीने से इस योजना को बल दिया गया है। इतने कम समय में हमने 21 करोड़ एलईडी बल्ब लगाने में सफलता पाई है और तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। अब तक जो एलईडी बल्ब लगे हैं, उसके कारण परिवारों में जो बिजली का बिल आता था, उसमें 11 हजार करोड़ रुपये की बचत हुई है। अगर किसी सरकार ने बजट में ग्यारह हजार करोड़ रुपये बिजली उपभोक्ताओं को देना तय किया होता तो अखबारों की हेडलाइन बन

जाती। एलईडी बल्ब लगाने मात्र से ग्यारह हजार करोड़ रुपये बिजली का बिल सामान्य जनों के घरों में कम हुआ है। जब कार्य संस्कृति अलग होती है तो कैसा परिवर्तन आता है इसका यह नमूना है। ... (व्यवधान) विपक्ष के नेता शिञ्चूल कास्ट के बजट को लेकर भाषण कर रहे थे लेकिन बड़ी चतुराईपूर्वक वर्ष 2013-14 के आंकड़े के ऊपर बोलना अच्छा नहीं माना, वर्ष 2013-14 आता था तब अटक जाते थे। शिञ्चूल कास्ट सब प्लॉन कुल आबंटन वर्ष 2012-13 37,113 करोड़ रुपये, वर्ष 2013-14 41,561 करोड़ रुपये, वर्ष 2016-17 38,833 करोड़ रुपये, 2016-17 40,920 करोड़ रुपये, 33.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस साल के बजट में 52,393 करोड़ रुपये है।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे: *

श्री नरेन्द्र मोदी : आपको शब्द सुनने की हिम्मत चाहिए, सत्य सुनने की हिम्मत चाहिए। ... (व्यवधान) यह भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाली सरकार है। भ्रष्टाचार की लड़ाई लड़ने के समय किस प्रकार से काम किए जाते हैं। ... (व्यवधान) 17 मंत्रालयों की 84 योजनाओं को डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर योजना के साथ जोड़ कर आगे किया। 32 करोड़ लोगों को 1,56,000 करोड़ रुपये डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर योजना में दिया गया। उससे क्या लाभ हुआ है। किस प्रकार से हर गली मोहल्ला में चोरी और लूट की व्यवस्था थी। इतनी बारीकी से हर जगह पर चोरी और लूट को रोकूंगा तो मेरे ऊपर कितना तुफान आएगा। मैंने गोवा में बोला था कि मैं ऐसे निर्णय करता हूँ तो मेरे ऊपर क्या बीतेगी मुझे मालूम है। ऐसे बड़े-बड़े लोगों को तकलीफ हो रही है और ज्यादा होने वाली है। उसके कारण मुझे अंदाज है कि मेरे ऊपर क्या-क्या जुल्म होने वाले हैं उसके लिए हम तैयार हैं। मैंने देश के लिए प्रण किया है इसलिए मैं कदम उठा रहा हूँ। पहल योजना, हमारे यहां गैस सिलेंडर जाते थे और सब्सिडी मिलती थी जब उसको आधार योजना से जोड़ा तो उसका लिकेज करीब 26 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा लिकेज रुका। जिसकी वजह से हम डेढ़ करोड़ परिवारों को गैस का कनेक्शन देने में हम सफल हुए। ... (व्यवधान)

आप अध्ययन कर लीजिए। मैं जब सदन में बोलता हूँ तो जिम्मेदारी के साथ बोलता हूँ। ... (व्यवधान) पिछले ढाई वर्षों में गरीब आदमी के हक को छीनने का काम फर्जी राशन कार्ड वाले करते थे। गरीब को जो मिलना चाहिए, बिचौलिए अपने यहां फर्जी राशन कार्ड के ठप्पे रखते थे, माल चुरा लेते थे और कालाबाजारी में बेचते थे। जब से हमने टेक्नोलाजी का उपयोग किया, आधार का उपयोग किया, करीब 2 करोड़ 33 लाख फर्जी राशन कार्ड पकड़े गए। इससे करीब 14 हजार करोड़ की रकम, जो बिचौलिए गरीब के हक की खाते थे, मुख्य धारा में आई और गरीबों की तरफ गई।

* Not recorded.

मनरेगा में आधार से पेमेंट दी जाती है। पैसा डायरेक्ट ट्रांसफर होता है, करीब 94 परसेंट सक्सेस मिली है। इसका परिणाम यह हुआ है कि 7,633 करोड़ रुपए का लीकेज बच पाया है। यह एक वर्ष में नहीं, आने वाले वर्षों में भी बचने वाला है। नेशनल सोशल असिस्टेंस प्रोग्राम, एनएसएपी, करीब 400 करोड़ रुपया, जिसका कोई लेनदार नहीं मिल रहा है, लेकिन पैसे जाते थे। ऐसी कुछ चीजें पाई गईं, जिस बेटी का जन्म नहीं हुआ, वह बेटी विधवा भी हो गई और खजाने से धन भी जा रहा है। हम इन सबको रोकने की कार्य संस्कृति लेकर चले हैं। स्कालरशिप जैसी कई चीजें हैं। मैं मोटा अंदाज लगाता हूं, अभी तो शुरुआत है, हर वर्ष 49,500 करोड़ रुपए बिचौलियों के पास जाते हुए रुक गए। आप कल्पना कर सकते हैं कि करीब 50,000 करोड़ रुपया जो गरीबों के हक का था, बिचौलिए खा जाते थे, करप्शन के नाम पर, लूट के नाम पर, उसे रोकने के लिए बड़ी हिम्मत लगती है, हमने करके दिखाया है।

अध्यक्ष जी, मैं कार्य संस्कृति का एक उदाहरण भी देना चाहता हूं। किसानों की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। हर वर्ष राज्यों के मुख्यमंत्री भारत सरकार को इस बात की चिट्ठी लिखते थे कि हमें यूरिया मिलना चाहिए। जब मैं भी मुख्यमंत्री था, लिखता रहता था, क्योंकि यूरिया पाने में बहुत बड़ी दिक्कत होती थी। मैं आज बड़े संतोष के साथ कहता हूं कि पिछले दो साल से किसी मुख्यमंत्री को यूरिया के लिए चिट्ठी नहीं लिखनी पड़ी, कहीं यूरिया के लिए कतार नहीं लगी है, कहीं यूरिया के लिए लाठीचार्ज नहीं हुआ है। यह बात हम भूले नहीं, पुराने अखबार निकाल लीजिए, किसानों को यूरिया पाने के लिए कितनी तकलीफ होती थी। अब मुझे बताइए क्या नीम कोटिंग का ज्ञान हमें ही है, आपको नहीं था। आपको था। 5 अक्टूबर, 2007 को यूरिया नीम कोटिंग की चर्चा ग्रुप आफ मिनिस्टर द्वारा प्रिंसीपली एप्रूव हुई। 5 अक्टूबर, 2007 से लेकर अब तक क्या हुआ, करीब छः साल, एक तो आपने कैप 35 परसेंट लगाई कि इससे ज्यादा नीम कोटिंग नहीं करनी है। जब तक 100 परसेंट नहीं करते हैं, तब तक उसका कोई लाभ ही नहीं होता है क्योंकि यूरिया चोरी होता है, कारखानों में चला जाता है, किसान के नाम पर सब्सिडी के बिल कटते हैं, लेकिन किसान को लाभ नहीं मिलता था। यूरिया का दुरुपयोग सिंथेटिक मिल्क बनाने में होता था, इसके कारण गरीब बच्चों की जिंदगी के साथ खेला जाता था। यूरिया को 100 परसेंट नीम कोटिंग किया। आपने निर्णय किया था, छः साल में आप 35 प्रतिशत का कैप लगाने के बाद 35 प्रतिशत तक नहीं पहुंच पाए, सिर्फ 20 प्रतिशत नीम कोटिंग की। हमने आकर इस बात को हाथ में लिया, आपका 6 साल और मेरा छः महीना, हिन्दुस्तान में 100 परसेंट यूरिया नीम कोटिंग कर दिया। इम्पोर्टेड यूरिया को भी नीम कोटिंग कर दिया। आपकी कार्य-संस्कृति और हमारी कार्य-संस्कृति में फर्क इतना है। नीम कोटिंग की बात आती है तो आप खड़े हो जाते हैं कि यह तो हमारे जमाने का है। मैंने आज आपके मैदान में खेलना तय किया है, मैं खेलकर दिखाता हूं कि आपका हाल क्या है। नीम कोटिंग का हमने अध्ययन करवाया, एग्रीकल्चर डेवलपमेंट एंड रूरल ट्रांसफार्मेशन सेंटर ने एनालिसिस करके रिपोर्ट दी है। किसानों का कितना

भला हो रहा है, देखिए, धान के उत्पादन में पांच प्रतिशत वृद्धि, गन्ने के उत्पादन में 15 प्रतिशत वृद्धि। आप कल्पना कर सकते हैं कि किसानों का इसके कारण कितना खर्चा बच रहा है।

अध्यक्ष जी, किस प्रकार से महामहिम राष्ट्रपति जी ने हम सबसे आह्वान किया है कि लोकसभा और विधानसभा के चुनाव साथ-साथ होने की दिशा में सोचने का समय आ गया है। इसे राजनीतिक तराजू से न तौला जाए। तत्कालीन हर किसी को थोड़ा बहुत नुकसान होगा, लेकिन इस विषय पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। हर वर्ष पांच-सात राज्यों में चुनाव होते ही रहते हैं। एक करोड़ से ज्यादा सरकारी मुलाजिम कभी न कभी चुनावों में लगे ही रहते हैं। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े अध्यापकों और प्राध्यापकों को चुनाव के काम में जाना पड़ता है, बार-बार चुनाव के कारण सबसे ज्यादा भविष्य की पीढ़ी को नुकसान हो रहा है। इसके कारण खर्च में भी बहुत बड़ी वृद्धि हो रही है। वर्ष 2009 के चुनाव में 1100 करोड़ का खर्च हुआ और 2014 के लोकसभा के चुनाव में 4000 करोड़ से भी ज्यादा खर्च हुआ। आप कल्पना कर सकते हैं कि इस गरीब देश पर कितना बोझ पड़ रहा है।

अध्यक्ष जी, आज कानून व्यवस्था की दृष्टि से अनेक नई चुनौतियां आ रही हैं। प्राकृतिक संकटों के कारण सिक्योरिटी फोर्स की मदद लगती है। दुनिया भर में फैल रहा आतंकवाद और हमारे दुश्मन देश जिस तरह हरकतें कर रहे हैं, सिक्योरिटी फोर्स को उसमें लगा देते हैं। इतना बड़ा काम बढ़ता जा रहा है। दूसरी तरफ सिक्योरिटी की ज्यादातर शक्ति चुनावी प्रबंधन में लगाई जाती है, उनको भेजना पड़ता है। हम इन संकटों को समझें। एक दीर्घदृष्टा के रूप में कोई एक दल इसका निर्णय नहीं कर सकता है, सरकार इसका निर्णय कतई नहीं कर सकती है, लेकिन अनुभव के आधार पर जिम्मेदार लोगों को मिलकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा, हमें रास्ता खोजना होगा। महामहिम राष्ट्रपति जी ने जो चर्चा निकाली है, हमें उस चर्चा को आगे बढ़ाना चाहिए। उनके धन्यवाद के लिए हमें प्रयास करना चाहिए!...(व्यवधान)

श्री एम.बी.राजेश (पालक्काड) : आपने एनपीए के बारे में कुछ नहीं कहा।...(व्यवधान)

श्री कल्याण बनर्जी : स्टेट फंडिंग कर दीजिए।...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: हमारे देश के ग्रामीण अर्थ कारण को मजबूत किए बिना देश का अर्थ कारण आगे नहीं बढ़ सकता है। मैं हैरान हूँ, विपक्ष के नेता को महामहिम राष्ट्रपति जी के संबोधन में दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, युवा, मजदूर के उल्लेख से भी परेशानी हुई। क्या इस देश में दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित लोगों का महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में स्थान नहीं होना चाहिए, उसे पीड़ा होनी चाहिए। मैं हैरान हूँ कि ऐसी पीड़ा क्यों होती है।

SHRIMATI P.K. SHREEMATHI TEACHER (KANNUR): Why there is no mention of the Women's Reservation Bill in the Address?... (*Interruptions*)

श्री नरेन्द्र मोदी: हमने कृषि सिंचाई योजना पर बल दिया। आप देखिए, मनरेगा में कैसा मूलभूत परिवर्तन आया, आपने तीन साल में सिर्फ 600 करोड़ रुपया बढ़ाया था और हमने आकर दो साल में 11000 करोड़ रुपया बढ़ा दिया। हमने स्पेस टेक्नोलॉजी का उपयोग किया। हमने उसके अंदर जियो टैगिंग की व्यवस्था की है। हमने तालाब बनाने पर भी बल दिया है, क्योंकि सिंचाई सबसे बड़ी बात है। मत्स्य पालन के लिए भी छोटे-छोटे तालाब काम में आ सकते हैं। गरीब व्यक्ति कमा सकता है। उसके कारण हम करीब दस लाख से ज्यादा तालाब बनाने का संकल्प लेकर चल रहे हैं। पिछली बार भी हमने तालाब बनाने के लिए बल दिया था। इससे हमारे किसानों को एक बहुत बड़ा लाभ होने की संभावना है। जियो टैगिंग के कारण मौनीटरिंग की व्यवस्था है। इसका भी लाभ होगा।

स्पेस टेक्नोलॉजी में सैटेलाइट के अंदर बहुत चीजें होने के बावजूद भी हम उनका उपयोग नहीं कर पाये। हमने सैटेलाइट छोड़कर अखबारों में, सुर्खियों में जगह बनाने का प्रयास किया। इस सरकार ने लगातार भरपूर प्रयास किया है। हम उसे भी आगे बढ़ाने का काम करें।

प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना - फसल बीमा योजना पहले भी थी, लेकिन फसल बीमा लेने के लिए किसान तैयार नहीं था। फसल बीमा योजना पहले भी थी, लेकिन किसान के हकों की रक्षा नहीं होती थी। हम सब सार्वजनिक जीवन में काम करने वाले लोग हैं। राजनीतिक दल के सिवाय भी समाज के प्रति हमारी एक जिम्मेदारी है। इस सदन के सब लोग प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना का अध्ययन करें कि हमारे इलाके के किसानों को कैसे मदद मिल सकती है। वे उसका फायदा उन तक पहुंचायें। पहली बार प्राकृतिक आपदा के कारण बुआई न हुई हो, तब भी वह बीमा का हकदार बना है। फसल काटने के बाद भी अगर पन्द्रह दिनों के अंदर कोई और आपदा आयी, तब भी वह फसल बीमा का हकदार बने, यह निर्णय छोटा नहीं है। ... (व्यवधान) इसलिए हम सबका दायित्व बनता है कि किसानों को यह जो लाभ मिला है, उस लाभ को हम उन तक पहुंचायें।

सॉयल हेल्थ कार्ड में राजनीतिक मतभेद हो सकता है। लेकिन आप अपने इलाके के किसानों को सॉयल हेल्थ कार्ड के बारे में समझाइये। इससे उनका फायदा होगा। उनकी लागत कम हो जायेगी। सही भूमि पर सही फसल से उपयुक्त लाभ होगा, यह सीधा-सीधा विज्ञान है। उसमें राजनीति करने की कोई जरूरत नहीं है। इसे हमें आगे बढ़ाना चाहिए। मैं चाहूंगा कि इसमें छोटे-छोटे इंटरप्रिन्योर्स आगे आयें। वे खुद अपनी प्राइवेट लैब बनायें और खुद सर्टिफाइड लैब के द्वारा धीरे-धीरे गांवों में एक नये रोजगार का क्षेत्र भी खुले, उस दिशा में हमें काम करना चाहिए।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, यहां पर युवाओं को रोजगार देने के अवसर पर चर्चा हुई। मुद्रा योजना से करीब-करीब दो करोड़ से ज्यादा लोगों को बिना किसी गारंटी के धन दिया गया है। उससे वह खुद अपने पैरों पर खड़ा हुआ है। अगर वह पहले से खड़ा था, तो उसमें एक से अधिक व्यक्तियों को रोजगार

देने की ताकत आयी है। हम लोगों की यही सोच रही कि जब तक हम देश में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ायेंगे तब तक कुछ नहीं होगा। हमारी नीतियां ऐसी होनी चाहिए कि हर जगह रोजगार की संभावनाएं बढ़ें और हमने उस नीति को अपनाया। हमने स्किल डेवलपमेंट में बल दिया है। इसका लाभ है कि हमारे यहां कृषि क्षेत्र में अब प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना है। हम जब प्रधान मंत्री कृषि योजना लागू कर रहे हैं, तो क्या उस काम में लोगों को रोजगार नहीं मिलेगा। हमने प्रधान मंत्री ऊर्जा गंगा योजना के साथ पूर्वी भारत को गैस पाइप लाइन से जोड़ने की दिशा में बड़ा अभियान चलाया है। सैंकड़ों किलोमीटर की गैस पाइपलाइन लगने वाली है। क्या उसमें नौजवान को रोजगार की संभावना नहीं है। इसलिए विकास की वह दिशा होनी चाहिए, जिसमें नौजवानों को रोजगार मिले।

हमने अभी टेक्सटाइल और जूतों के क्षेत्र में अनेक इनीशियेटिव्स लिये हैं, जिसके कारण लोगों को नये रोजगार और नये-नये क्षेत्रों में रोजगार की संभावना हुई है। देश के छोटे उद्योगों को बढ़ावा देना बहुत जरूरी है। इस बजट में भी बहुत महत्वपूर्ण फैसले किये गये हैं। छोटे-छोटे उद्योगों को जितना बल मिलेगा, उसके कारण हमारे देश में रोजगार की संभावनाएं बढ़ेंगी। अगर हम जीरो इफैक्ट को अपने प्रोडक्शन का क्राइटीरिया रखें, तो हम दुनिया की मार्केट को भी कैप्चर कर सकते हैं। हमारे छोटे उद्योगकारों की एक्सपोर्ट करने की ताकत होती है। बड़े-बड़े उद्योगकारों में छोटे-छोटे पुर्जे लगते हैं, जो छोटे-छोटे कारखानों से मिलते हैं। हम इससे इंजीनियरिंग की दुनिया में मिरकेल कर सकते हैं। सरकार अभी नये बजट में जो योजनाएं लायी है, उनका लाभ 96 परसेंट उद्योगकारों को मिलने वाला है। चार प्रतिशत बड़े लोग बाहर रह गए, लेकिन जो 50 करोड़ रुपये से कम वाले करीब 96 प्रतिशत लोग हैं, उन सब को फायदा मिल रहा है और बहुत बड़ा फायदा मिल रहा है। उसके कारण रोजगार के लिए बहुत बड़ी संभावनाएं बनने वाली हैं।

यहां पर सर्जिकल स्ट्राइक की बात आई। मैं हैरान हूं, अपने सीने पर हाथ रखकर पूछिए। सर्जिकल स्ट्राइक के पहले 24 घण्टे में राजनेताओं ने कैसे-कैसे बयान दिए, कैसी भाषा का प्रयोग किया, लेकिन जब देखा कि देश का मिजाज अलग है तो उनको अपनी भाषा बदलनी पड़ी। मैं आपसे आग्रह करता हूं, यह बहुत बड़ा निर्णय था और इस निर्णय के बारे में कोई मुझसे पूछता नहीं है। नोटबन्दी के बारे में पूछते हैं कि मोदी जी, इसे सीक्रेट क्यों रखा। बोलते हैं कि कैबिनेट को भी नहीं बताया। सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में कोई नहीं पूछ रहा है।

भाइयो-बहनो, देश की सेना का जितना गुणगान करें...(व्यवधान) हम अपने देश की सेना का जितना गुणगान करें, उतना कम है। ...(व्यवधान) इतनी सफल सर्जिकल स्ट्राइक की है।...(व्यवधान) मैं जानता हूं कि सर्जिकल स्ट्राइक आपको परेशान कर रही है।...(व्यवधान) सर्जिकल स्ट्राइक आपको परेशान कर रही है। सर्जिकल स्ट्राइक के बारे में आपकी मुसीबत यह है कि पब्लिक में जाकर बोल नहीं पाते हैं और

अंदर पीड़ा अनुभव कर रहे हैं। यह आपकी मुसीबत है।...(व्यवधान) लेकिन आप मानकर चलिए कि यह देश, ... (व्यवधान) हमारी सेना इस राष्ट्र की रक्षा के लिए पूरी सामर्थ्यवान है, पूरी शक्तिवान है।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, मुझे विश्वास है कि इस सदन में संवाद हो, नए-नए शोध हों, नए-नए विचारों को रखा जाए, क्योंकि हम लोग ज्ञान के पुजारी हैं, विचारों का स्वागत करने वाले लोग हैं। जितने नए विचार मिलेंगे, किसी भी दिशा से विचार आएंगे, जरूरी नहीं है कि विचार इसी दिशा से आएंगे, किसी भी दिशा से विचार आएंगे, उत्तम विचारों का स्वागत है, क्योंकि हम सभी का मिलकर अल्टीमेट उद्देश्य है - अपने देश को आगे बढ़ाना। अल्टीमेटली हम सभी का उद्देश्य देश को बुराइयों से मुक्त कराना है। अल्टीमेटली हमारा उद्देश्य है देश को नई उंचाइयों पर ले जाना। आज विश्व के अंदर एक अवसर आया है, ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं। आज विश्व की जो अवस्था है, उसमें भारत के लिए एक अवसर आया है, अगर हम इस अवसर का फायदा उठाएं, एक स्वर से, एक ताकत के साथ हम दुनिया के सामने प्रस्तुत हों तो मुझे विश्वास है कि हमारे पूर्वज जो सपना देखकर चले थे, उसको हम पूरा कर सकते हैं।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे समय दिया, सदन ने मेरी बात सुनी, इसके लिए मैं आभारी हूँ। मैं फिर एक बार आदरणीय राष्ट्रपति जी का हृदय से अभिनन्दन करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।